ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 31 अंक 359 अक्टूबर–2025

मोहन राकेश : आधुनिकता का संकट

कीर्ति जैन हृषिकेश सुलभ
रामगोपाल बागला सेवाराम त्रिपाठी
विनय शर्मा चेतना जालान
(प्रस्तुति : मृत्युंजय श्रीवास्तव)

कहानियाँ

अनुजीत इकबाल रेखा राजवंशी
शेखर मल्लिक उर्मिला शिरीष
जसबीर भुल्लर (पंजाबी)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 31, अंक 359, अक्टूबर 2025

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

अनिश्चितता के दौर में : **संपादकीय** 5

कहानियां

पापा की प्रोफाइल : **अनुजीत इकबाल** 12
पिता कौन : **रेखा राजवंशी** 20
फूलडूंगरी पहाड़े : **शेखर मल्लिक** 25
लिफाफे : **उर्मिला शिरीष** 37
परिंदों के देश की यात्रा (पंजाबी) : **जसबीर भुल्लर**
(अनुवाद : **नीलम गोयल**) 42

कविताएं

महेश आलोक/नितेश व्यास/महाराज कृष्ण संतोषी/हरगोविंद पुरी/खुर्शीद अकरम/फूलचंद गुप्ता/रंजना श्रीवास्तव/नीरज नीर/मनीषा कुमारी/दीपक भारती/उमेश पंकज/अजय टोपवार/शिवानंद सिंह 'सहयोगी'/कुंवर रवींद्र सिंह/सत्यशील राम त्रिपाठी 51
संस्कृत कविताएं : **प्रवीण पंड्या** 69

जन्मशती चर्चा

मोहन राकेश : आधुनिकता का संकट : **कीर्ति जैन/हृषिकेश सुलभ/रामगोपाल बागला/सेवा राम त्रिपाठी/विनय शर्मा/चेतना जालान**
(प्रस्तुति : **मृत्युंजय श्रीवास्तव**) 70

आलेख

मोहन राकेश के नाटक में नगरबोध : **चंदन कुमार** 96

विश्वदृष्टि

मेरा आदमी : **रोसा मोंतेरो** (स्पेनी कहानी)
(अनुवाद : **अश्वनी कुमार**) 101

समीक्षा संवाद

समकालीन कहानी के तीन स्वर : **आदित्य कुमार गिरि**
(हरियश राय, अनिल यादव और धनेश दत्त पांडेय के कहानी संग्रह) 104

सोशल मीडिया 112

विविध

पाठक संसद/सांस्कृतिक गतिविधियां/किताबें 115

लघुकथा

रास्ते की मटरगश्ती (असमिया) : **मणिका देवी** (अनुवाद : **दिनकर कुमार**) 49

बतरस

मोहन राकेश के पात्र आधुनिक समय की प्रवृत्तियों के प्रतिरूप हैं : **कुसुम खेमानी** 119

देश-देशांतर

सुब्रह्मण्य भारती (तमिल)/ **हरमन हेस** (जर्मन)

मल्टी मीडिया

भवानीप्रसाद मिश्र की कविता **सन्नाटा** /वाचन **: अनुपमा ऋतु**

कविताओं में रेखांकन :
संदीप राशिनकर

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये
वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड पार्सल) 450+510 = 960 रुपये
त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु. + 1530 (नई रजिस्टर्ड पार्सल दर) = 2880/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें
एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
© सर्वाधिकार सुरक्षित
● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

संपादकीय

अनिश्चितता के दौर में

इसपर दृष्टि जानी चाहिए कि हम एक गहन अनिश्चितता के संग जी रहे हैं। हमारे जीवन के तानेबाने में अनिश्चितता जितनी अधिक पसरती जा रही है, असुरक्षा का बोध उतना बढ़ता जा रहा है।

पता नहीं व्यापार युद्ध में दोस्तियां कब कहां से खिसक कर कहां चली जाएं, पता नहीं कृत्रिम मेधा (एआई) क्या कहर ढा दे और रोजगार छिन जाए। पहाड़ पर अचानक कब बादल फट पड़ें, शहर के होटल-गाड़ियां बहने लगें। पता नहीं किधर से कुछ व्यक्ति हिंसक हमला कर दें या मोबाइल पर लूट लें! मनुष्य में असुरक्षा भावना होती है तो इसका एक नतीजा यह सामने आता है कि उसका दूसरों पर विश्वास घटने लगता है।

एक बार दो ज्ञानियों वसिष्ठ और विश्वामित्र के बीच लड़ाई में स्वर्ग न जा पाकर कोई स्वर्ग और धरती के बीच त्रिशंकु बनकर रह गया। उससे स्वर्ग पहुंचा नहीं गया और अपनी धरती भी नहीं मिल सकी! इसी तरह मानवता किसी गहरे ट्रैफिक जाम में फँसी है। वह अनिश्चित भविष्य और संवेदनाहीन वर्तमान के बीच एक कराह बनी हुई है।

कवि केदारनाथ सिंह की पंक्तियां हैं, 'यह जो समूचा समय है/ उसमें रोशनी, राख, नदियां, तिलचट्टे/ सब कुछ है/ सिर्फ समूचापन झर गया है।' यह चिंता लोगों के दिमाग से धीरे-धीरे खोती गई। वैश्वीकरण ने एक खास भूमि पर समूचेपन की खोज की थी। इसने कुछ स्वप्न दिखाए थे, लेकिन दुनिया फिर कई फाड़ है। बड़ी संख्या में लोग अपने-अपने देश की राजनीतिक व्यवस्था से निराश होकर विलगाव का अनुभव कर रहे हैं। अब हमारी छोटी-छोटी खुशियों, खेलकूद, मेला, उत्सव, भोजन-कपड़े जैसी चीजों पर भी स्याह छायाएं हैं।

अनिश्चितता बढ़ती है तो दूसरों पर विश्वास ही नहीं मिटता, अतिवादी राजनीतिक दृष्टिकोण भी उभरने लगते हैं। पिछले कुछ सालों से कई देशों